उत्तरमध्य कालीन काव्य

केशवदास – भक्तिकाल और रीतिकाल के मिलन-बिन्दु पर स्थित कवि केशव रीतिवादी साहित्य के जन्मदाता, प्रवर्तक, प्रचारक और आचार्य थे। उनका आगमन भक्तिकाल के अन्त और रीतिकाल के प्रारम्भ में हुआ। इसलिए उनके काव्य में भक्ति और रीति दोनों की विशेषताएँ सहजता पायी जाती हैं। संस्कृत भाषा का पाण्डित्य केशव को उनकी वंश परम्परा से प्राप्त हुआ है। इसलिए इनके काव्य में संस्कृत भाषा का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। "संवत् 1598 में कृपाराम थोड़ा बहुत रस निरूपण भी कर चुके थे। उसी समय के मोहनलाल मिश्र ने 'श्रृंगारसागर' नामक एक ग्रन्थ श्रृंगार सम्बंधी लिखा। नरहरि कवि के साथी कवि करनेस ने 'कर्णाभरण,' श्रुतिभूषण और भूपभूषण नामक तीन ग्रन्थ लिखे। रस निरूपण और अलंकार निरूपण का सूत्रपात हो जाने पर केशवदास ने काव्य के सब अंग का निरूपण शास्त्रीय पद्धति पर किया।"[1]

हिन्दी काव्य में केशव ही एक मात्र ऐसे कवि हैं, जो सबसे अधिक आलोचना के शिकार हुए हैं। किसी ने इन्हें 'हृदयहीन' कहा तो किसी ने 'कठिन काव्य का प्रेत', किसी ने 'केवल शब्द व्यवसायी' तो किसी ने छन्दों की प्रदर्शनी सजाने वाला। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार – "केशव को कवि हृदय नहीं मिला था। उनमें वह सहृदयता और भावुकता न थी, जो एक कवि में होनी चाहिए। वे संस्कृत से सामग्री लेकर अपने पाण्डित्य और रचना कौशल की धाक जमाना चाहते थे। पर इस कार्य में सफलता प्राप्त करने के लिए भाषा पर जैसा अधिकार चाहिए था, वैसा उन्हें प्राप्त नहीं हुआ।"

केशवदास की हृदयहीनता के कारण :– ① क्लिष्ट कल्पना – केशव ने सर्वत्र क्लिष्ट कल्पना का आश्रय लिया है। उन्होंने काव्य में सरस और सहज कल्पनाओं का प्रयोग किया। उन्होंने 'रामचन्द्रिका' में अयोध्या नगरी को देवपुरी के समान बताने के लिए क्लिष्ट कल्पनाओं का ही परिचय दिया है।

2. **भाषा की क्लिष्टता** – संस्कृत के प्रकाण्ड पण्डित और अलंकार प्रियता होने के कारण केशव के काव्य में भावों का, भाषा की सहजता एवं सरलता का अभाव रहा है। इनके घर में संस्कृत भाषा का ही प्रयोग किया जाता था। घर के नौकर भी संस्कृत बोलते थे तो फिर भाषा में सरसता कैसे आ सकती है। भाषा की दुरूहता और कठिनता के कारण ही

---

1. 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' आचार्य रामचन्द्र शुक्ल पृष्ठ 166.

Scanned with CamScanner

आलोचकों ने केशव को हृदयहीन कवि बता दिया। केशव के ग्रन्थों की भाषा संस्कृत निष्ठ और दुरूह है, जिसे आम पाठक एवं श्रोता के लिए पढ़ना व समझना आसान नहीं है।

3. अलंकारों का आधिक्य :- केशव अलंकारवादी आचार्य थे। उन्होंने अलंकार को काव्य की आत्मा माना है। केशव के कथनानुसार "जदपि, सुजाति सुलच्छनी, सुबरन सरस सुवृत्त। भूषण बिनु न विराजई, कविता, वनिता मित्त"। काव्य और नारी की शोभा अलंकार से है। केशव ने रूपक, उपमा, उत्प्रेक्षा, श्लेष, संदेह, विभावना, सन्देह, आदि अनेक अलंकारों का प्रयोग अपने काव्य में किया है। कहीं-कहीं पर तो कवि ने एक पंक्ति में अनेक अलंकारों का प्रयोग किया है। जिससे उनके काव्य में भाव की अपेक्षा अलंकार सौन्दर्य दिखाई पड़ता है।

4. छन्दों का बाहुल्य :- केशव ने उस समय तक प्रयुक्त सभी छन्दों का प्रयोग अपने काव्य में किया है। 'रामचन्द्रिका' में सभी छोटे-बड़े छन्द मिल जाते हैं जैसे- सवैया, घनाक्षरी, दोधक, तारक, दण्डक, सवैया, त्रोटक, स्वागता, कवित्त आदि। इसलिए कुछ आलोचकों ने रामचन्द्रिका को 'छन्दों का अजायबघर' कहा है।

5. चमत्कार-प्रदर्शन :- केशव दास की रुचि चमत्कार प्रदर्शन की ओर रही है। 'रामचन्द्रिका' जैसे काव्य में केशव ने कलापक्ष के चमत्कार में पड़कर अनेक स्थानों पर काव्य को नीरस बना दिया है। जैसे दण्डक वन की शोभा उन्हें प्रलय की ज्वाला के समान लगती है। जैसे — "विषमय यह गोदावरी, अमृतन को फल देत।" विष का अर्थ जल बताया है।

6. बौद्धिकता :- केशव ने छन्दों और अलंकारों के बाहुल्य के साथ साथ चमत्कार और भाषा व कल्पना की क्लिष्टता को महत्व दिया है। जिससे उनके काव्य में बौद्धिकता का समावेश हो गया है। सूर्य के माध्यम से श्रीराम की महिमा का बखान किया है —

"तारापति तेजहर, तारका को तार कर है।
प्रगट प्रभात कर ही की प्रभुताई है।

रामचन्द्रिका प्रबन्ध काव्य है, जिसमें श्रीराम के जीवन का वर्णन हुआ है।

Scanned with CamScanner